



बरसात के गीत

राकेश कुमार वर्मा

कवि, लेखक, आर्टिस्ट LineSays.org

मैं नहीं जानता वो बरसात के गीत,
फिर भी गीत वही सुनाता हूँ.....

गुंजन भवरो जैसी,
ये बगिया को गुंजाता है,
कौपल फूटी निरा हृदय से,
होठो से गीत सुनाता है....

मैं नहीं जानता वो बरसात के गीत,
फिर भी गीत वही सुनाता हूँ.....

कोयल की कूकी सुन,
मन मोर मयूरा,
पंख फेलता है,
ठंडी बूंदों से ये तन,
ता-ता- थ्या-थ्या गाता है...

मैं नहीं जानता वो बरसात के गीत,
फिर भी गीत वही सुनाता हूँ.....



वो गोरी का भीगा आँचल,
दिल को बहुत मचलता है,
वो सूनी सूनी रातो में, जब
प्रियतम की याद दिलाता है...

मैं नहीं जानता वो बरसात के गीत,
फिर भी गीत वही सुनाता हूँ.....

सावन की पहली झम झम संग,
वट डाल झूलो से लद पड़ी,
वो कोमल कमरिया गोरी की,
जो हवाओ संग आसमान छड़ी....

ये बदरा बारिश, मेघा- छम छम,
फिर वो बीती याद दिलाता हैं....

मैं नहीं जानता वो बरसात के गीत,
फिर भी गीत वही सुनाता हूँ.....

गली में उमड़े सैलाबों संग,
बचपन की ठिठोलिया,
कागज की कश्तियो पे,
वो माठी वाली ढेलिया,

वो छपा-छपा की धुन में बजती,



यारो वाली टोलियाँ.....

मैं नहीं जानता वो बरसात के गीत,
फिर भी गीत वही सुनाता हूँ.....

मैं लोट पड़ा हूँ बचपन में,
जब ओले और टपके की कहानी थी,
गुदड़ी में दुपकाने वाली वो सब,
मम्मी की सहेली थी,

आज टपके का डर तो नहीं,
पर इसके भयावक्ता से डरता हूँ,
बदलते हुए मोसम की इस,
अनिश्चितता से डरता हूँ,

आज बूंदों में बढते,
विष ग्रहीता से डरता हु,
मैं नहीं जानता वो बरसात के गीत,
फिर भी गीत वाही सुनाता हूँ.....